रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड १३: विल्लिपुनर्वन (जाग्रति का बुलावा)

‘विल्लिपुनर्वन’, ‘जाग्रति का बुलावा’, निस्वार्थ पालनहार गुरु नानक की अकाल सोच जिन्होंने 'पंच भूत स्थलम' में सारी दुनिया के कल्याण का शाश्वत मंत्र प्रस्तुत किया।

सत संतोखी सतिगुर पूरा ॥
गुर का सबद मने सो सूरा ॥
साची दरगह साच निवासा मानै हुकम रजाई हे ॥
(राग मारू, गुरु नानक)

सच्चा और संतुष्ट सतगुरु ही अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है।
रूहानी शबद पर विचार करने वाले ही सच्चे सूरमा होते हैं।
सच्चा ज्ञान उन्हीं को प्राप्त होता है जो ईमानदारी और संतोष के साथ कुदरत के हुक्म में रहते हैं।
(राग मारू, गुरु नानक)

योध्दा अपने दुश्मन को हराने के लिये रणनीति बनाता है लेकिन सच्चा योध्दा वह है जो भय पर विजय प्राप्त करता है तथा जीत के रूप में संतोष और सत्य को प्राप्त करता है।

पुरी में कुछ समय ठहराव के बाद, गुरु नानक और भाई मरदाना ने दक्षिण की ओर सफ़र शुरू किया और गंजम, गुंटूर, कांचीपुरम, तिरुवन्नामलाई और तिरुचिरापल्ली होते हुये नागपट्टिनम की बंदरगाह पर पहुंचे। पहले वह पुरी से दक्षिण की ओर गंजम गये।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अब हम पुरी से गंजम का सफ़र कर रहे हैं।

कुछ लिखतों में दर्ज है कि पुरी में ठहराव करने के बाद गुरु नानक और भाई मरदाना वापिस पंजाब में ननकाना साहिब चले गये थे। मेहरबान और भाई मनी सिंह वाली जन्मसाखियों में दर्ज है कि पुरी से उन्होंने दक्षिण का सफ़र किया। डॉ. कृपाल सिंह की किताब 'जन्मसाखी परंपरा’ के आंकलन के मुताबिक हम दक्षिण की ओर पुरी से गंजम की तरफ जा रहे हैं।

गंजम में रुशिकुलिया नदी के किनारे हम कुमारी पहाड़ के शिख़र पर एक पुरातन मज़हबी स्थान की ओर जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: गंजम में तारातारिणी 'शक्ति पीठ' है। यह 'शक्ति' मत का महत्वपूर्ण स्थान है जिसमें नारी शक्ति को सर्वोच्च माना जाता है।

'शक्ति' का अर्थ है ताकत। यह नारी शक्ति की नुमाइंदगी करती है जो दयावान है परन्तु यह ऊर्जसवी भी है जिसमें बेग़र्ज़ पालनहार के गुण हैं। हमदर्दी के बिना समाज की भलाई के लिये कोई विकास नहीं हो सकता। शिव मत के मुताबिक सती ने अपने पति, शिव में हमदिली का अहसास जगाने के लिये अपने जीवन का बलिदान दिया था। अतीत की उदासीनता को महसूस करते हुये, भगवान शिव कई दिनों तक सती के मर्त शरीर को लेकर घूमते रहे। भगवान शिव को आगे बढ़ाने और उन्हें एक नई जागृति का अहसास कराने के इरादे से, भगवान विष्णु ने सती के शरीर को खंडित कर दिया जो भारतीय उपमहाद्वीप में इक्यावन स्थानों पर गिरे। इन सभी स्थानों पर पवित्र 'शक्ति पीठ' बने हैं जहां नारी शक्ति की पूजा की जाती है। गंजम में 'स्तन पीठ' बना है क्योंकि यहां सती का दाहिना स्तन गिरा था।

गावन तुधनो ईसर ब्रहमा देवी सोहन तेरे सदा सवारे ॥
गावन तुधनो इंद्र इंद्रासण बैठे देवतिआ दर नाले ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

शिव, ब्रह्मा और देवी पार्वती हाज़रा-हज़ूर की महिमा गाते हैं। उन पर हाज़रा-हज़ूर की रहमत है। हाज़रा-हज़ूर की महिमा का गायन इंद्र अपने इन्द्रासन से करते हैं जो हाज़रा-हज़ूर की सेवा में जुडे देवताओं के साथ विराजमान हैं।
(राग आसा, गुरु नानक)

'देव' संस्कृत का शब्द है जिसका इस्तेमाल पहुंचे हुये मनुष्य के लिये किया जाता है, 'देवता' इसका मर्दाना भाव है और 'देवी' इसकी स्त्री का इज़हार है। गुरु नानक ने फ़रमाया कि कायनाती शक्तियों सहित समूची सृजना एक ही हाज़रा-हज़ूर सृजनहार का रूप हैं, जो स्त्री और पुरुष के बीच विभाजन और भेदभाव की पैमाइश से परे है।

गुर नानक और भाई मरदाना गंजम से दक्षिण की ओर मौजूदा आंध्र प्रदेश के शहर गुंटूर की तरफ चल पड़े।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अब हम गंजम से गुंटूर जा रहे हैं।

तेलुगु भाषा में गुंटूर का अर्थ है पानी का तालाब। गुंटूर अपने तालाबों के लिये प्रसिद्ध था।

गुंटूर में तालाबों के कुदरती नज़ारों और उसमें पल रहे जीवों को निहारते हुये गुरु नानक ने गाया,

दादर तू कबहि न जानस रे ॥
भखस सिबाल बसस निरमल जल अंमृत न लखस रे ॥
(राग मारू, गुरु नानक)

हे मेंढक! तुम्हे कभी समझ नहीं आयेगी।
तुम निर्मल जल में रहते हुये भी गंदगी ही खाते हो और निर्मल जल के अमृत की कद्र नहीं करते।
(राग मारू, गुरु नानक)

मेंढक और कमल का फूल एक ही तालाब में रहते हैं। एक ओर कमल हर प्रकार की अशुद्धता से विरक्त रहता है और दूसरी ओर मेंढ़क गंदगी का भोग करता है। हम भी संसारिक वासनाओं में डूबे रहते हैं और ख़ुदाई से अनभिज्ञ रहते हैं। अनजान मेंढक की तरह हम भी अपने आसपास के सकारात्मक तत्वों का लाभ उठाने से वंचित रहते हैं।

हम 'बड़ा उदासीन मठ' जा रहे हैं जो गुरु नानक की याद में उन्नीसवीं सदी के दौरान चंदू लाल ने बनवाया था। चंदू लाल हैदराबाद के निज़ाम के वज़ीर थे। उन्होंने गुरु नानक के संदेश के प्रचार-प्रसार में दक्षिण इंडिया में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने गुंटूर, हैदराबाद, कांचीपुरम, रामेश्वरम, तिरुचिरापल्ली और तिरुवन्नामलाई में मठों का निर्माण करवाया था।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक के गुंटूर के इलाके में आने की याद में 'बड़ा उदासीन मठ' बनाया गया था।

किसी समय में ऐसे 'उदासीन मठों' का दक्षिण इंडिया में गुरु नानक के संदेश को फैलाने में बहुत योगदान था। बीसवीं सदी की सामाजिक-सियासी वास्तविकताओं ने इन परंपराओं मे दरार डाल दी है। मौजूदा दौर में गुरु नानक से साथ ज़ाहिराना तौर पर जुड़े अंश इन मठों से ओझल हो गये हैं।

हनुमान दास: उदासियों का मोह-माया से कोई लगाव नहीं है। यही उनका मज़हब है। हम गुरु नानक को कलियुग में विष्णु का अवतार मानते हैं। यह 'उदासीन' मठ सत्रह सौ तैंतालीस में बनाया गया था। पंजाब से भी संत आते थे। पहले हम गुरुमुखी पढ़ लेते थे। मैं तो यह भी जानता हूँ। हमारे यहां मंत्र दिया जाता था।

ੴ सतगुरु प्रसाद, अकाल मूर्त, अजूनी सैभं, आदि सच, जुगादि सच, है भी सच, नानक होसी भी सच॥
(जप, गुरु नानक)

वह हाज़रा-हज़ूर है। उसका अहसास रहमत की रहनुमाई से होता है। उसकी मूर्त अकाल है। वह अजुनी है। उसका अस्तित्व अपने-आप में मुक़्क़मल है। वह अनादि काल से सच है और आज भी सच है।
नानक ने फ़रमाया कि वह सदा सच रहेगा।
(जप, गुरु नानक)

मैं यह भी जानता हूँ! आपको समझ आया? यह हमारे गुरु मंत्र के रूप में दिया जाता है। हमारे उदासीन साधु गुरु मंत्र के रूप में यही देते हैं। यह संतों की बोली है। उदासीन बिरादरी में अब तो कम हो गई लेकिन पहले वे बहुत बाणी सिखाते थे। अब नहीं। अब हमें गुरु नानक की बाणी याद नहीं है।

इस बुज़ुर्ग से गुरु नानक की बाणी सुन कर पुराने दौर की नज़दीकी की पुष्टि होती है।

आदि सच जुगाद सच ॥
है भी सच नानक होसी भी सच ॥
(जप, गुरु नानक)

वह अनादि काल से सच है। वह यहां और अब भी सच है।
नानक ने फ़रमाया कि वह हमेशा सच रहेगा।
(जप, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि रूहानियत का फ़लसफ़ा कायनाती है जिसका हर जीव लाभार्थी हो सकता है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने गुंटूर से दक्षिण की तरफ अपना सफ़र जारी रखा और कांचीपुरम पहुंच गये।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये हम अब गुंटूर से कांचीपुरम जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: कांचीपुरम दक्षिण इंडिया का प्राचीन तीर्थ स्थल है। गुरु नानक के समय में, यह बौद्धों, जैनियों और ब्राह्मणों का मज़हबी केंद्र था।

संस्कृत के शब्द 'सप्त पुरी' का इस्तेमाल हिंदू मज़हब के सात पवित्र स्थानों के लिये होता है। हिंदुओं का मानना है कि इन सात स्थानों की तीर्थ यात्रा करने से मुक्ति मिलती है। यह स्थान हैं; अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, वाराणसी, कांचीपुरम, उज्जैन और द्वारका।

इन स्थानों पर बड़ी संख्या में तीर्थयात्री आते हैं। गुरु नानक तीर्थयात्रियों के साथ गोष्ट करने के लिये इन स्थानों पर पहुंचे।

इतिहास में कांचीपुरम को 'घटिकास्थनम' के नाम से भी जाना जाता है। इसका अर्थ है विभिन्न मज़हबों के अध्ययन का केंद्र।

कांचीपुरम को हिंदू मज़हब के शिव और विष्णु मतों में पवित्र शहर माना जाता है। हम इकंबरनाथर मंदिर जा रहे हैं जो मिट्टी की नुमाइंदगी करता है। दक्षिण इंडिया में भगवान शिव को समर्पित पांच 'भूत स्थल' मंदिर हैं। इकंबरनाथ मंदिर उन पांच मंदिरों में से एक है। यह मंदिर पांच कायनाती तत्वों; मिट्टी, जल, अग्नि, वायु और अस्पर्शनीय आकाश का प्रतिनिधित्व करते हैं।

ऊंधउ खपरु पंच भू टोपी ॥
काँइआ कड़ासणु मनु जागोटी ॥
सतु संतोखु संजमु है नालि ॥
नानक गुरमुखि नामु समालि ॥
(राग रामकाली, गुरु नानक)

अपनी रूढ़ीवादी सोच को पलटा कर भीख मांगने वाला कटोरा बना लो। पांच तत्व के सबक को अपने सर की टोपी बना लो।
अपने शरीर को ध्यान लगाने का आसन और मन को धोती बना लो।
सच, संतोष और संयम को अपने साथी बना लो।
नानक ने फ़रमाया, रूहानीत से उन्मुख आत्म-पड़चोल मे लीन रहते हैं।
(राग रामकाली, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि मानव शरीर पांच तत्वों का मंदिर है जिसमें बेअंत का वास है। उसके एहसास को बाहर तलाश क्यो करना है? मेरी तुच्छ सी समझ में मनुष्य शरीर के प्रति श्रद्धा इलाही आराधना के समान है।

अब हम कांचीपुरम में 'उदासीन बावा जी मठ' जा रहे हैं।

यह 'उदासीन मठ' गुरु नानक के आगमन की याद में उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान चंदू लाल ने बनवाया था जो हैदराबाद के निज़ाम के वज़ीर थे।

अमरदीप सिंह: 'उदासीन बिरादरी' ने गुरु नानक के फ़लसफ़े को दूर-दराज के इलाकों में पहुंचाने में अहम हिस्सा डाला। जब मैं उन्नीस सौ चौरानबे में कांचीपुरम के 'उदासी मठ' में आया था, तब इस स्तंभ पर गुरु नानक का मूल मंत्र उकेरा हुआ था।

जब मैं पिछली बार इस स्थान पर आया था, तब मेरी मुलाकात नब्बे वर्षीय 'उदासीन' महंत बसंत दास से हुई थी। उनसे गुरु नानक की बाणी सुनने की यादें मेरे मन पर अंकित हैं। यह उनकी गुरु नानक में श्रद्धा की गवाही भरता था। महंत बसंत दास की पृष्ठभूमि उड़ीया थी, लेकिन वह 'उदासियों' की संगत में पले-बढ़े थे जो गुरु नानक का फ़लसफ़ा पढ़ाते थे।

अफ़सोस कि हमारे इस बार आने से छह महीने पहले वह अपनी संसारिक यात्रा मुक़्क़मल कर चुके थे।

शंकर: मेरा नाम शंकर है। मैं मठ में बाबा जी के साथ रहता हूँ। उन्होंने मुझे बचपन से पाला था।

अमरदीप सिंह: बचपन से आप उनके साथ रहे हो, तो बाबा जी ने आपको गुरु नानक के बारे में क्या बताया?

शंकर: वह गुरु नानक जी का पूरा प्रचार करते थे। ग्रंथ साहिब पढ़ते थे। उनके बारे में पूरा बताते थे।

अमरदीप सिंह: वह उड़ीया थे लेकिन उनको गुरुमुखी पढ़नी-लिखनी आती थी।

शंकर: हां! गुरुमुखी आती थी। वह बाणी पढ़ते और गाते थे? सब करते थे। प्रचार भी करते थे। आने-जाने वालों को शिक्षा देते थे। आने वालों का आदर-मान करते थे। लंगर खिलाते थे। वह जाने वाले साधुओं को दक्षिणा देते थे। इसी तरह पंजाबी और सिख आते थे। आप जैसे लोग आते थे, उनके सामने गुरु नानक का प्रचार करते थे। महाराज जी बहुत अच्छे थे।

महंत बसंत दास से मुलाकात ना होने की निराशा में, मैं सोच रहा हूं कि पांच तत्वों का पुतला मानव शरीर फ़ना हो सकता है, लेकिन इससे आने वाली ज्ञान की किरणें हमेशा रौशन रहती हैं।

ऐसे हालात मुझे मानव जीवन के उद्देश्य के बारे में सोचने के लिये प्रेरित करते हैं।

काइआ महल मंदर घर हर का तिस महि राखी जोत अपार ॥
नानक गुरमुख महल बुलाईऐ हर मेले मेलणहार ॥
(राग मलार, गुरु नानक)

मानव शरीर चेतना का घर है। इसमें अपार ज्योत का वास है।
नानक ने कहा कि रूहानी उन्मुख आत्म-चिंतन का आह्वान करता है जहां मिलाने वाले ने दिव्यता से मेल करवाना है।
(राग मलार, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि मानव जीवन का मकसद तजुर्बे से सीखना और कीमियागीरी वाली तब्दीलियों के लिये प्रयास करना है जो आत्मा को उसके स्रोत के साथ एक करती हैं।

अब हम जैन मंदिर जा रहे हैं जिसे कांचीपुरम के पड़ोस में चोला राजाओं ने बनवाया था।

अमरदीप सिंह: कांचीपुरम के बाहर त्रिपरुतिकुमारम गांव में एक जैन मंदिर है जहां गुरु नानक आये थे। इस मंदिर को जैन कांची भी कहा जाता है।

गुरु नानक और भाई मरदाना का इस स्थान पर एक जैन भिक्षु ने गर्मजोशी से स्वागत किया। उस भिक्षु ने गुरु नानक से जैन मज़हब के रीति-रिवाज़ और फ़लसफ़े के बारे में विचार करते हुये जैनियों के 'अहिंसा' से जुड़े बुनियादी सिद्धांतों और प्रथाओं के बारे में बताया। समय के साथ, 'अहिंसा' ने सख़्त दस्तूरी पाबंदियों का रूप ले लिया। इन दस्तूर में बालों में पलते जीवन को नुकसान पहुंचाने से रोकने के लिये अकेला-अकेला बाल खींच कर निकालना और पानी के जीवों को मरने से बचाने के लिये पीने वाले पानी को साफ़ ना करना शामिल है। उस भिक्षु ने गुरु नानक से पूछा कि वह इस तरह के अमलों को ज़िंदगी में क्यों नहीं अपनाते? गुरु नानक ने गाया,

सिर खोहाइ पीअहि मलवाणी जूठा मंग मंग खाही ॥
फोल फदीहत मुहि लैन भड़ासा पाणी देख सगाही ॥
भेडा वागी सिर खोहाइन भरीअन हथ सुआही ॥
माऊ पीऊ किरत गवाइन टबर रोवन धाही ॥
(राग माझ, गुरु नानक)

सिर से बाल-बाल उखाड़ना मल वाला पानी पीना और मांग कर खाना।
मल त्याग की क्रिया के दौरान भड़ास लेना लेकिन किसी जीव को मरने से बचाने के लिये साफ़ पानी पीने से डरना।
आत्म-पडचोल के बिना भेड़ों की तरह अपना सिर मुंडवाना। रूहानियत के बिना हाथ में राख के सिवा कुछ नहीं आता।
वे संन्यास में माता-पिता की तर्ज़-ऐ-ज़िंदगी को तिलांजलि दे देते हैं जिस कारण उनके परिवार संकट में फूट-फूटकर रोते हैं।
(राग माझ, गुरु नानक)

सख़्त अनुपालन मनुष्य और समाज की प्रगति के रास्ते में बाधा बन जाता है। गुरु नानक ने समझाया कि किसी मज़हब की रूहानी गहराई उसके व्यावहारिक तौर पर लागु करने से संबंधित होती है जो सच्ची सोच, शब्दों और कर्मों के माध्यम से ज़ाहिर होती है।

गुरु नानक ने विविधता के संयोजन पर ज़ोर दिया। ऐसी ही एक अभिव्यक्ति उन्होने व्यावहारिक रूप मे स्थानीय संगीत शैलियों को अपनी बाणी के गायन में शामिल किया। उनकी बंदिश 'रामकली दखनी ओंकार' को दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत परंपरा में रखा जाता है।

गगन अगंम अनाथ अजोनी ॥
असथिर चीत समाध सगोनी ॥
(राग रामकली दखणी ओंकार, गुरु नानक)

कायनाती ऊर्जा अगम, अनाथ और अजुनी है।
सुरतिकी स्थिरता को बनाये रखना सबसे अनोखी समाधिहै।
(राग रामकली दखणी ओंकार, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना ने दक्षिण की ओर आगे बढ़ते हुये कांचीपुरम से तिरुवन्नामलाई का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर हम तिरुवन्नामलाई जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: मंदिर वाला यह तीर्थ-स्थान अन्नामलाई पहाड़ियों की तलहटी में अरुणाचल पहाड़ी के नीचे है। यह शहर अपने अरुणाचलेश्वर मंदिर के लिये प्रसिद्ध है। गुरु नानक रूहानियत के आरज़ूमंद की संगत के साथ गोष्टी करने इस शहर में आये थे।

दक्षिण इंडिया में भगवान शिव को समर्पित पांच तत्वों से जुड़े शहरों में तिरुवन्नामलाई भी शामिल है जो अग्नि के हिस्से आया है। यहां अरुणाचलेश्वर मंदिर में आग की अरुणाचलेश्वर के रूप में पूजा की जाती है। हिंदू पौराणिक कथाओं में एक कहानी है कि एक बार मस्ती करते हुये पार्वती ने अपने पति शिव की आंखें बंद कर दीं, जिससे पूरी पृथ्वी अंधेरे में डूब गई। रूपक के तौर पर इसका अर्थ है अज्ञानता के कारण अपने-आप और दूसरों को पीड़ा पहुंचाना; इसके बाद पछतावा करने के लिये पार्वती ने तिरुवन्नामलाई में पश्चाताप किया। भगवान शिव ने अरुणाचल पहाड़ी की चोटी पर आग जलाई जिसका रूपक के तौर पर अर्थ था, जागरूकता के प्रकाश से अज्ञान के अंधेरे को मिटाना।

रोवहि किरपन संचहि धन जाइ ॥
पंडित रोवहि गिआन गवाइ ॥

बाली रोवै नाहि भतार ॥
नानक दुखीआ सभ संसार॥
मंने नाउ सोई जिण जाइ ॥
अउरी करम न लेखै लाइ ॥
(राग रामकाली, गुरु नानक)

कंजूस जमा की गई दौलत के बेअर्थ जाने पर रोते हैं।
पंडित हासिल किये गये ज्ञान के नाकामयाब होने पर रोते हैं।
युवा कोई साथी ना होने के कारण रोते हैं।
नानक ने कहा कि पूरा संसार दुखी है।
कुदरत के नियमों से बंधा हुआ मनुष्य ही विजयी होता है।
इसके बिना कोई कर्म किसी काम नहीं आता।
(राग रामकाली, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि पूरी दुनिया विभिन्न रूपों की अज्ञानता की शिकार है, जिसे तप से नहीं बल्कि चिंतन से दूर किया जा सकता है।

अमरदीप सिंह: पंजाब की 'उदासीन' बिरादरी के महंतों ने गुरु नानक के फ़लसफ़े को दूर-दराज के इलाकों में पहुंचाया और तिरुवन्नामलाई में 'उदासीन मठ' का निर्माण करवाया। अब उस 'मठ' का कोई नामोनिशान नहीं है।

तिरुवन्नामलाई से विदा होते हुये मैं जीवन के विरोधाभासी पहलुओं के बारे में सोच रहा हूं, एक तरफ मीठा है और दूसरी तरफ कड़वा। दोनों पक्षों की इंतहा, लालसाओं के वश में पड़कर, तन और मन के तवाज़ुन को बिगाड़ देती हैं। जब यह प्रवृत्ति निज से समाज में फैलती है तो यह सामाजिक बुराइयों का कारण बनती है और लोगों में 'बद' 'इत्तिफ़ाक़ी' पैदा करती है। गुरु नानक ने हमें इस मर्ज़ के ख़िलाफ़ आगाह किया है।

मिठा कउड़ा दोवै रोग ॥
(राग सारंग, गुरु नानक)

मीठे और कड़वे अनुभवों के साथ जुड़ाव दोनों ही रोग हैं।

(राग सारंग, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना ने तिरुवन्नामलाई से दक्षिण की ओर तिरुचिरापल्ली का सफ़र किया।

अब हम तिरुवन्नामलाई से तिरुचिरापल्ली जा रहे हैं।

हम तिरुचिरापल्ली में वैष्णव मत के श्री रंगम मंदिर जा रहे हैं।

(जाप)

अमरदीप सिंह: तिरुचिरापल्ली वैष्णव मत का सबसे पवित्र मंदिर है, जो कावेरी और कोलिडम नदियों के बीच स्थित है। 'वैष्णवी' मत के दस्तूर को देखने के लिये गुरु नानक और भाई मरदाना ने इस स्थान पर कुछ समय गुज़ारा।

इस शहर में ग्यारहवीं शताब्दी के दौरान भगती लहर से जुड़े वैष्णववाद के संत रामानुज ने अपने जीवन के अंतिम दिन इसी बिताये थे।

तिरुचिरापल्ली में गुरु नानक की याद में एक 'उदासीन मठ' उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में चंदू लाल द्वारा बनवाया गया था जो हैदराबाद के निज़ाम के वज़ीर थे। अब उस मठ का कोई निशान नहीं है।

दक्षिण भारत के मंदिर सृजनहार के विभिन्न रूपों को समर्पित हैं। सृजनहार का इज़हार शिव, विष्णु और ब्रह्मा के रूप में किया गया है। इस सफ़र के दौरान इन मंदिरों में आने का अनुभव मुझे गुरु नानक के संदेश की याद दिलाता है कि यह रूप एक ही स्रोत की उपज हैं और सभी उसी एक में लीन हो जाते हैं।

सुँनहु ब्रहमा बिसन महेस उपाए ॥
सुँने वरते जुग सबाए ॥
इसु पद वीचारे सो जन पूरा तिस मिलीऐ भरम चुकाइदा ॥
(राग मारू, गुरु नानक)

ब्रह्मा, विष्णु और महेश की सृजना निरंकार हाज़रा-हज़ूर ने की है।

निरंकार हाज़रा-हज़ूर सभी युगों में पालक है। सर्वव्यापकता के पथ पर चल कर
मनुष्य पूर्ण होता है। इस विवेक की प्राप्ति से सभी भ्रम दूर हो जाते हैं।
(राग मारू, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना तिरुचिरापल्ली से बंदरगाह वाले शहर नागापट्टिनम गये।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये हम तिरुचिरापल्ली से नागपट्टिनम जा रहे हैं।

नागापट्टिनम शब्द 'नगर' से बना है जिसका अर्थ है श्रीलंकाई मूल के आबादकार और 'पट्टिनम' का अर्थ है तटीय शहर। नागापट्टिनम तमिलनाडु का एक बंदरगाह वाला शहर है। यह कुदुवयारी नदी के बंगाल की खाड़ी के मुहाने पर आबाद है।

समुद्र के रास्ते, गुरु नानक और भाई मरदाना ने नागापट्टिनम से श्रीलंका का सफ़र किया।

पहले यह श्रीलंका और इंडिया के बीच एक प्रमुख सौदागरी मार्ग था।

गुरु नानक का सौदा निराला था। उन्होंने खुद को सौदागर बताया जो सोच-विचार और पूरे सृजना की ऐकता वाले संदेश में सौदागरी करते हैं।

मै बनजारन राम की ॥
तेरा नाम वखर वापार जी ॥
(राग गौड़ी बैरागन, गुरु नानक)

मैं सृजनहार का बंजारा हूं।
सृजन के बारे में विचार करना ही मेरा सौदा है और सौदागरी भी है।
(राग गौड़ी बैरागन, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड १३: विल्लिपुनर्वन (जाग्रति का बुलावा)

इस एपिसोड में उल्लिखित चर्चा बिंदु गुरु नानक की दक्षिण भारत यात्रा और इस दौरान प्राप्त रुहानी अंतर्दृष्टियों के माध्यम से उनके रूपांतरणकारी सफ़र को समझने के लिए एक ज्ञानवर्धक ढांचा प्रस्तुत करते हैं। उनकी यात्राओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और उनके विचारों के दार्शनिक पहलुओं की जांच करके हम यह समझ सकते हैं कि उनका संदेश भौगोलिक, सांस्कृतिक और धार्मिक सीमाओं से परे कैसे गया। ये प्रश्न हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करते हैं कि गुरु नानक ने विभिन्न धार्मिक परंपराओं के साथ कैसे वार्तालाप किया, बाह्य आडंबरों की आलोचना करते हुए रुहानी सत्य की एकता पर बल दिया। उदासीन मठों और अन्य स्मारक स्थलों के माध्यम से उनकी विरासत को संजोना रुहानी परंपरा के समय के साथ विकसित होते रूप को दर्शाता है और यह आधुनिक समाज में इसकी प्रासंगिकता को उजागर करता है। इन चर्चा बिंदुओं के माध्यम से हम गुरु नानक के अनुभवजन्य अध्यात्म, मानव शरीर की पवित्रता और समस्त सृष्टि में सृजनहार की उपस्थिति पर दिए गए ज़ोर की सराहना कर सकते हैं; उनकी समावेशी दृष्टि आज भी विभिन्न धर्मों में एक प्रभावशाली प्रेरणा बनी हुई है। यह ढांचा इस बात पर चिंतन को प्रेरित करता है कि उनके एकत्व के संदेश, प्रकृति और मानवता में दिव्यता की पहचान धार्मिक विविधता के प्रति सम्मान और समझ के साथ व्यवहार करने हेतु कैसे स्थायी अंतर्दृष्टियाँ प्रदान करते हैं।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक की दक्षिण भारत यात्रा का भौगोलिक और रुहानी महत्व क्या था?

यह एपिसोड गुरु नानक की दक्षिण की विस्तृत यात्राओं का वृत्तांत प्रस्तुत करता है, जहाँ उन्होंने जानबूझकर प्रमुख धार्मिक केन्द्रों का मार्ग चुना। पुरी में समय बिताने के बाद, गुरु नानक और भाई मरदाना गंजम, गुंटूर, कांचीपुरम, तिरुवन्नामलई, तिरुचिरापल्ली होते हुए नागपट्टिनम के बंदरगाह तक पहुँचे। यह यात्रा ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण तीर्थ मार्गों का अनुसरण करती थी, जिनमें कांचीपुरम 'सप्त पुरी' या हिन्दू परंपरा में सात पवित्र स्थलों में से एक माना जाता है; ऐसा विश्वास है कि इन सातों स्थलों की तीर्थ यात्रा करने से रुहानी मुक्ति प्राप्त हो सकती है। एपिसोड यह दर्शाता है कि गुरु नानक ने इन स्थानों का चयन रणनीतिक रूप से किया: उन्होंने ऐसे स्थलों को चुना जहाँ बड़ी संख्या में श्रद्धालु एकत्र होते थे, ताकि वे उनसे वार्तालाप कर सकें। इन धार्मिक केन्द्रों के इस जानबूझकर चयन से गुरु नानक के उद्देश्य

और उनके सार्वभौमिक संदेश को विविध सांस्कृतिक और धार्मिक परिदृश्यों में फैलाने की उनकी विधि को कैसे समझा जा सकता है?

२. दक्षिण भारत में गुरु नानक की रुहानी अंतर्दृष्टियों को संजोने और फैलाने में उदासीन परंपरा ने क्या योगदान दिया?

यह एपिसोड दक्षिण भारत में गुरु नानक की विरासत को संजोने और बनाए रखने वाले केन्द्रों की स्थापना और संचालन में उदासीन परंपरा की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करता है। इसमें उल्लेख है कि 'उदासीन मठ' (सन्यासियों द्वारा संचालित शिक्षण केन्द्र) जैसे संस्थानों ने दक्षिण भारत में गुरु नानक का संदेश फैलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। गुंटूर में 'बड़ा उदासीन मठ' की स्थापना उन्नीसवीं सदी के प्रारंभ में चंदू लाल द्वारा गुरु नानक की स्मृति में की गई थी, जो हैदराबाद की निज़ाम रियासत में मंत्री थे। उन्होंने गुंटूर, हैदराबाद, कांचीपुरम, रामेश्वरम, तिरुचिरापल्ली और तिरुवन्नामलई जैसे स्थानों में 'मठों' की स्थापना कर दक्षिण भारत में गुरु नानक का संदेश फैलाने में अहम योगदान दिया। यह शिक्षण केन्द्रों का यह नेटवर्क गुरु नानक का संदेश विविध भौगोलिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में फैलाने की विधियों के बारे में क्या अंतर्दृष्टियाँ प्रदान करता है, और कांचीपुरम में महंत बसंत दास जैसे शिक्षकों की भूमिका इन परंपराओं को जीवित रखने में क्या रही?

३. गुरु नानक की दक्षिण भारत यात्राओं के ऐतिहासिक साक्ष्य आज भी कहाँ उपलब्ध हैं, और समय के साथ क्या कुछ खो गया है?

यह एपिसोड संरक्षण और क्षरण की दोहरी वास्तविकताओं की एक प्रेरक झलक प्रस्तुत करता है जो गुरु नानक की यात्रा के चिन्हों से संबंधित हैं। जबकि कुछ स्मारक स्थल अब भी विद्यमान हैं, कई स्थानों पर गुरु नानक के रुहानी संदेशों से जुड़ी कड़ियाँ क्षीण हो चुकी हैं। इस पाठ में उल्लेख है कि बीसवीं सदी की प्रारंभिक सामाजिक-राजनीतिक घटनाओं के बाद ये परंपराएँ बिखर गईं। वर्तमान समय में, इन केन्द्रों पर गुरु नानक से जुड़ी ठोस कड़ियाँ कम हो गई हैं। तिरुवन्नामलई में बताया गया है: पंजाब से आए 'उदासीन महंतों' ने, जो गुरु नानक के दर्शन को दूर-दराज़ तक ले गए थे, वहाँ एक 'उदासीन मठ' की स्थापना की थी। अब यह 'मठ' वहाँ मौजूद नहीं है। इसी प्रकार तिरुचिरापल्ली में भी एक मठ स्थापित किया गया था, लेकिन आज वहाँ इसका कोई चिन्ह शेष नहीं है। कौन से कारण इन क्षेत्रों में गुरु नानक की विरासत से इस क्रमिक अलगाव के लिए उत्तरदायी हो सकते हैं, जबकि कुछ स्थानों पर यह जुड़ाव सशक्त रहा? और यह स्थिति सदियों तक रुहानी धरोहर को संजोने की चुनौतियों के बारे में क्या संकेत देती है?

४. दक्षिण भारत की यात्राओं के दौरान गुरु नानक ने विविध धार्मिक परंपराओं से कैसे वार्तालाप किया?

यह एपिसोड दर्शाता है कि गुरु नानक ने जिन धार्मिक परंपराओं का सामना किया, उनके साथ उन्होंने सम्मानपूर्वक किन्तु सुधारात्मक दृष्टिकोण से वार्तालाप किया। कांचीपुरम के पास एक जैन मंदिर में, जब उनसे 'अहिंसा' के कठोर अभ्यास का पालन न करने पर प्रश्न किया गया, तो गुरु नानक ने एक सबद के माध्यम से कठोर व्याख्याओं को चुनौती दी: भावार्थ: सिर के बाल उखाड़ना, मैला पानी पीना, भीख मांगकर जूठन खाना – बिना समझे बाल कटवाकर कोई रुहानी लाभ नहीं मिलता। एपिसोड बताता है कि गुरु नानक ने विविधता के माध्यम से जुड़ाव को बढ़ावा दिया और क्षेत्रीय संगीत रूपों को अपनाया: 'रामकली दखणी ओंकार' उनकी एक रचना है जिसे दक्षिण भारतीय संगीत प्रणाली के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। पुरी में उन्होंने पूज्य जगन्नाथ मंदिर का दौरा किया और कांचीपुरम में उन्होंने शैव और वैष्णव परंपराओं दोनों के साथ वार्तालाप किया। ये वार्तालाप गुरु नानक की अंतर्धार्मिक वार्तालाप की विधियों और धार्मिक रूढ़ियों को चुनौती देने के उनके तरीकों को कैसे उजागर करते हैं, जबकि वे विभिन्न परंपराओं में अंतर्निहित रुहानी अंतर्दृष्टियों का सम्मान करते हैं?

५. गुरु नानक की दक्षिण भारत यात्राओं की स्मृति को संजोने में स्मारक संरचनाओं ने क्या भूमिका निभाई?

यह एपिसोड उन विभिन्न स्थलों का वर्णन करता है जो गुरु नानक की दक्षिण भारत यात्रा की स्मृति में स्थापित किए गए थे। कांचीपुरम में 'उदासीन बाबा जी मठ' की स्थापना उन्नीसवीं सदी में चंदू लाल द्वारा गुरु नानक की स्मृति में की गई थी। कथावाचक याद करते हैं कि उन्होंने १९९४ में एक खंभे पर 'मूल मंत्र' (गुरु नानक का सबद) खुदा हुआ देखा था। इन स्थलों का रख-रखाव और इनके द्वारा संदेश का प्रसार ऐसे समर्पित व्यक्तियों पर निर्भर था जैसे कि महंत बसंत दास, जो उनके शिष्य शंकर के अनुसार, गुरु नानक का संदेश फैलाते, 'गुरु ग्रंथ साहिब' का पाठ करते और सबदों का अर्थ समझाते थे। ये भौतिक स्मारक और उनसे जुड़ी मौखिक परंपराएँ रुहानी स्मृति को विभिन्न संस्कृतियों और समय के आर-पार संजोने के तरीकों के बारे में क्या संकेत देती हैं, और इन स्थलों के अस्तित्व और लोप दोनों से हमें क्या सीखने को मिल सकता है?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक की यह धारणा कि सृजनहार अपनी सृष्टि के माध्यम से स्वयं का अनुभव करता है, दैवी और मानवीय संबंधों की पारंपरिक समझ को कैसे नया रूप देती है?

एपिसोड में गुरु नानक के संदेश में प्रस्तुत एक गहन दार्शनिक अवधारणा को राग आसा में व्यक्त किया गया है। इसमें बताया गया है कि सार्वभौमिक रुहानी ऊर्जा ने ब्रह्मांड की रचना स्वयं को अपनी सृष्टि के माध्यम से अनुभव करने के लिए की है। यह ऊर्जा सब कुछ देखती है, समझती है और जानती है; यह हमारे भीतर और बाहर, हर स्थान पर विद्यमान है। एपिसोड समझाता है कि गुरु नानक इस संसार को एक रंगमंच के रूप में देखते हैं, जिसे सृजनहार ने बनाया है और जो अपनी सृष्टि के अस्तित्व का अनुभव इंद्रियों के माध्यम से करता है। यह दृष्टिकोण यह संकेत देता है कि परमात्मा हमारे भीतर है और हम परमात्मा के भीतर हैं; मूलतः हम एक ही हैं। यह धारणा दैवी और मानवीय के बीच पारंपरिक दूरी को समाप्त कर एक घनिष्ठ संबंध को प्रस्तुत करती है, जिसमें सृष्टि वह माध्यम बन जाती है जिसके द्वारा परमात्मा स्वयं को अनुभव करता है। यह दार्शनिक दृष्टिकोण पारंपरिक धार्मिक पदानुक्रमों को कैसे चुनौती देता है और मानवीय अस्तित्व के उद्देश्य को व्यापक ब्रह्मांडीय नाटक में कैसे पुनर्परिभाषित करता है?

२. जगन्नाथ मंदिर में अपनी प्रतिक्रिया के माध्यम से गुरु नानक की दृष्टि में कर्मकांड बनाम सच्ची रुहानी साधना का क्या रूप सामने आता है?

एपिसोड जगन्नाथ मंदिर में एक महत्वपूर्ण क्षण को दर्शाता है जब गुरु नानक ने वहाँ की आरती (पूजन की विधि) को देखा। इस अनुभव से प्रेरित होकर उन्होंने एक सबद की रचना की, जो केवल कर्मकांड पर केंद्रित होने के बजाय प्रकृति के सम्मान को महत्त्व देती है। राग धनासरी में रचित यह सबद पूजन की धारणा को पुनर्परिभाषित करता है। इसमें आकाश को थाल बताया गया है जिसमें सूर्य और चंद्रमा दीपक के रूप में चमकते हैं, जबकि तारे और नक्षत्र सुंदर मोती दर्शाते हैं। चंदन की खुशबू धूप का प्रतीक है, हवा चंवर का कार्य करती है और हरी-भरी वनस्पति सच्चे मन से की गई अर्पण है उस सर्वव्यापक ऊर्जा को। वह तर्क देते हैं कि जब परमात्मा प्रकृति के हर अंश में समाया हुआ है, तो उसकी महानता का गुणगान केवल कुछ तत्वों की पूजा करके करना तर्कसंगत नहीं है। यह आलोचना गुरु नानक की व्यापक रुहानी समझ को कैसे दर्शाती है, और उन धार्मिक प्रथाओं के लिए क्या निहितार्थ रखती है जो औपचारिक कर्मकांड को सृष्टि के प्रत्येक अंश में परमात्मा की उपस्थिति की पहचान से अधिक महत्त्व देती हैं?

३. पंचभूत (पाँच तत्वों) पर गुरु नानक की शिक्षा उनके इस विश्वास से कैसे जुड़ी है कि मानव शरीर एक मंदिर है?

एपिसोड में गुरु नानक की एकाम्बरनाथर मंदिर यात्रा का उल्लेख है, जो दक्षिण भारत के पाँच 'पंचभूत स्थल' में से एक है और शिव को समर्पित है। प्रत्येक मंदिर ब्रह्मांड के पाँच तत्वों – पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश – का प्रतीक है। इन तत्वीय मंदिरों के प्रत्युत्तर में गुरु नानक ने एक सबद में रूपकों

के माध्यम से यह सिखाया कि कट्टर सोच को उलटकर उसे ज्ञान की भिक्षापात्र बना देना चाहिए। वे सुझाव देते हैं कि इन पाँच तत्वों को एक टोपी के रूप में देखें, यह संकेत देते हुए कि इन्हें केवल बाहरी पूजन के रूप में नहीं बल्कि रुहानी समझ के अवयव के रूप में समझा जाना चाहिए। गुरु नानक हमें सिखाते हैं कि पाँच तत्व पूज्य वस्तुएँ नहीं, बल्कि हमारी रुहानी अंतर्दृष्टि का अभिन्न हिस्सा हैं। वे आगे बताते हैं कि हमारा शरीर एक हवेली, मंदिर और आत्मचेतना का घर है, जिसके भीतर अनंत दिव्यता वास करती है। यह एपिसोड गुरु नानक के इस विश्वास को प्रकट करता है कि पाँच तत्वों से निर्मित मानव शरीर एक पवित्र मंदिर है जिसमें अनंत का निवास है। इसलिए वे प्रश्न करते हैं कि कोई बाहर रुहानी अनुभव की तलाश क्यों करे। उनके विनम्र दृष्टिकोण में, मानव शरीर का सम्मान करना परमात्मा का पूजन करने के समान है। यह दृष्टिकोण पारंपरिक पूजन की अवधारणा को कैसे रूपांतरित करता है, जब वह दैवी उपस्थिति को बाह्य ढांचों से हटाकर मानव रूप में स्थापित करता है? और यह हमारे शरीर और दूसरों के शरीर के प्रति हमारे आचरण पर क्या नैतिक प्रभाव डालता है?

४. गुरु नानक का अत्यधिक धार्मिक साधनाओं के प्रति दृष्टिकोण क्या था, और उन्होंने उस समय की धार्मिक रूढ़िवादिता को कैसे चुनौती दी?

जब एक जैन पुजारी ने गुरु नानक से पूछा कि उन्होंने 'अहिंसा' की कठोर साधनाएँ क्यों नहीं अपनाईं, तो गुरु नानक ने एक सबद के माध्यम से उत्तर दिया, जिसमें उन्होंने अत्यधिक तपस्याओं की धारणा को चुनौती दी। उन्होंने विशेष रूप से उन साधनों की ओर इशारा किया जैसे कि बालों को एक-एक करके उखाड़ना, मैला पानी पीना और जूठन के लिए भिक्षा माँगना। उन्होंने बताया कि इन कार्यों को बिना सोच-विचार के, भेड़ों की तरह करना किसी भी रुहानी उपलब्धि की ओर नहीं ले जाता। त्याग की खोज में व्यक्ति अक्सर अपने माता-पिता के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को भूल जाता है, जिससे उनके परिवार को पीड़ा पहुँचती है। यह एपिसोड यह दर्शाता है कि अत्यधिक तपस्याएँ व्यक्तिगत और सामाजिक विकास दोनों में बाधा डाल सकती हैं। गुरु नानक ने बल दिया कि सच्ची रुहानी गहराई विश्वास के मूल सिद्धांतों को व्यवहार में लाने से प्राप्त होती है, जिनमें विचार, वाणी और कर्म की पवित्रता शामिल है। यह दृष्टिकोण उन समकालीन रुहानी अनुशासन की धारणाओं को कैसे चुनौती देता है जो शारीरिक साधनाओं पर बल देती हैं? गुरु नानक का दर्शन रुहानी अनुशासन और व्यावहारिक जीवन के बीच किस प्रकार का संतुलन प्रस्तुत करता है?

५. गुरु नानक का 'एकत्व' का संदेश विविध धार्मिक अभिव्यक्तियों और रूपों को किस प्रकार समाहित करता है?

गुरु नानक का संदेश पूरे एपिसोड में विविध धार्मिक अभिव्यक्तियों के भीतर अंतर्निहित एकता की पुष्टि करता है। त्रिमूर्ति के संदर्भ में वे कहते हैं कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव निराकार सर्वव्यापक के रूप हैं। यह सर्वव्यापक तत्व सभी युगों में विद्यमान रहा है और इसका बोध होने पर संदेह मिट जाता है। स्त्री और पुरुष दैवी रूपों की चर्चा करते हुए, गुरु नानक बताते हैं कि समस्त सृष्टि, जिसमें दिव्य शक्तियाँ भी शामिल हैं, एक ही सर्वव्यापक सृजनहार की अभिव्यक्ति हैं, जो स्त्री और पुरुष के रूपों से परे है। यह दृष्टिकोण उनके संदेश को धार्मिक सीमाओं के पार पहुँचाता है, जैसा कि भद्रक गाँव की उस परंपरा से स्पष्ट होता है जहाँ आज भी एक नाटक प्रस्तुत किया जाता है जिसमें गुरु नानक 'एकत्व' के सार्वभौमिक मूल्यों को प्रकट करते हैं, यह बल देते हुए कि हमें राम (हिन्दू विश्वास) और रहमान (इस्लामिक विश्वास) में भेद नहीं करना चाहिए। वे सभी को अपने हृदय को पवित्र रखने, सबको अपनाने और मानवता पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करते हैं। गुरु नानक की 'एकत्व' की धारणा विभिन्न धार्मिक प्रतीकों और प्रथाओं के समावेशन को एक एकीकृत रुहानी दृष्टि के अंतर्गत किस प्रकार संभव बनाती है? और समकालीन बहुसांस्कृतिक समाजों में अंतर्धार्मिक संबंधों के लिए इसके क्या निहितार्थ हैं?